भारत में मतदान व्यवहार : महिलाओं के विशेष संदर्भ में

*नीतू गुप्ता

शोध सारांश

मतदान मनोवज्ञानिक तत्वों से प्रेरित एक गूढ़ राजनीतिक प्रक्रिया है जो अनेक आन्तरिक और बाहरी तत्वों से प्रभावित होती है। भारत जैसे विविधता वाले देश में केवल कुछ निश्चित शीर्षकों के अन्तर्गत सम्पूर्ण देश के मतदान व्यवहार का अध्ययन नहीं किया जा सकता है। सामाजिक व आर्थिक आधार पर व्याप्त असमानताओं के कारण भारतीय परिवेश में मतदाता के व्यवहार को निर्धारित करने वाले अनेक कारक विद्यमान हैं जिनमें जाति, धर्म, स्थानीय मुद्दे जैसे कारक प्रमुख हैं जो कि प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र के स्वरूप को निर्धारित करते हैं। महिला मतदाताओं का व्यवहार राजनीति के प्रति उपेक्षापूर्ण ही बना रहता है और उनका मतदान व्यवहार पारिवारिक व सामाजिक परिवेश के द्वारा ही निर्धारित होता है। प्रस्तुत लेख में भारतीय मतदाता के व्यवहार व महिलाओं की निर्णयकारी शक्ति के सन्दर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा।

संकेताक्षर–मतदाता व्यवहार, जाति, धर्म, निर्वाचन क्षेत्र, सामाजिक व आर्थिक असमानता, महिला अधिकार।

विषय प्रवेभा

लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं का मुख्य आधार है जनता के द्वारा सरकार के निर्माण की प्रक्रिया में जो निर्णयकारी भूमिका मतप्रयोग के माध्यम से अभिव्यक्त की जाती है। राजनीतिक व्यवस्था में चुनावों की जटिल भूमिका को निर्वाचकों के मतदान आचरण के आधार पर ही स्पष्ट करना संभव होने के कारण मतदान व्यवहार के अध्ययन अत्यधिक लोकप्रिय होने लगे हैं। जनता अपने वोट का प्रयोग करते समय कुछ निर्धारक तत्वों को अपने राजनीतिक व्यवहार का हिस्सा बना लेती है। एलेन बाल का मानना है कि विकसित और स्थिर लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक दल मतदाताओं के मतदान व्यवहार के प्रमुख नियामक माने जाते रहे हैं और मतदाता अपने परिवारों से दल निष्ठा विरासत में पाते हैं। किन्तु विकासशील देशों में जनता की अस्थिर प्रवृत्ति के कारण राजनीतिक दलों की विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव बना रहता है।

भारत जैसे देश में जो कि विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है में मतदान व्यवहार का कोई स्थापित आयाम निर्धारित नहीं किया जा सकता क्योंकि व्यक्तिगत हित राष्ट्रीय हितों से अधिक गहरे हैं। राजनीतिक नेताओं का व्यक्तित्व कभी–कभी उनके राजनतिक दल से भी बड़ा हो जाता है। किसी निर्वाचन क्षेत्र के भीतर लोगों का समूह जो कि समग्र रूप से किसी विशेष राजनीतिक दल या नेता को बहुत बड़ी संख्या में वोट देते हैं। लेकिन ये ही लोगों का समूह किसी दूसरे चुनाव में इसी निर्वाचन क्षेत्र से उस राजनीतिक दल के सदस्य को नकार भी सकते हैं। इसका एक कारण तो यह हो सकता है कि इन लोगों को उस दल या नेता की किसी विशेष नीति, कार्यक्रम या कार्य–प्रणाली से कोई विशेष लाभ प्राप्त होता है। परन्तु अधिकांश वोट बैंक केवल जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा या क्षेत्र की समानता के संकीर्ण आधार पर किसी विशेष दल या नेता के समर्थक बन जाते हैं।

मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्व

मतदान आचरण में आधारभूत तथ्य मतदाताओं की राजनीतिक जागरूकता है। मतदान व्यवहार को निर्धारित करने वाले कारकों में सम्बन्धित लोकतांत्रिक व्यवस्था के सामाजिक व आर्थिक कारकों का योगदान महत्वपूर्ण होता है। भारत जैसे संक्रमणकालीन व्यवस्थाओं में जहाँ कि शासन का स्वरूप पूर्णतया आधुनिक है और सामाजिक व्यवस्था परम्परागत आधारों पर संचालित है में मतदान व्यवहार को निर्धारित करने वाले कारकों में धर्म, जाति, स्थानीय मुद्दे, धनबल, भुजबल जैसे परम्परागत मुद्दों के पश्चात् राष्ट्रीय हित व राजनीतिक विचारधारा का आधार प्रारम्भ होता है।

भारत के संदर्भ में यह विशेष स्थिति है कि जो मतदाता केन्द्र सरकार के चुनावों में जिस राजनीतिक दल को अपना मत प्रदान कर रहा है। संभवतः वह राज्य विधानसभा के चुनावों में किसी अन्य राजनीतिक दल को भी अपना मत दे सकता है। क्योंकि भारत में वर्तमान तक भी राजनीतिक विचारधारा व राजनीतिक दलों के साथ जनता की गहरी प्रतिबद्धता नहीं जुड़ी हुई है। स्वतंत्रता पश्चात् भारत में कांग्रेस का एकछत्र राज्य था और जनता के समक्ष विकल्प का अभाव था किन्तु जैसे जैसे भारत में राजनीतिक परिवेश बदलता गया और जनता राजनीतिक रूप से अधिक शिक्षित होती गयी भारतीय राजनीति का सम्पूर्ण परिदृश्य बदल गया और 1977 के आम चुनावों में सत्ता परिवर्तन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि जनता के लिए राष्ट्रीय मुद्दे जाति और धर्म की संकीर्ण मानसिकता से ऊपर है। 1990 के दशक के पश्चात् भारतीय राजनीति के स्वरूप में व्यापक स्तर पर बदलाव परिलक्षित होने लगा है और राजनीति का संक्रमणकाल प्रारम्भ हो चुका है जिसमें कांग्रेस के शासन ने गठबंधन की सरकारों का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। इसका प्रमुख कारण भारत के मतदाता के व्यवहार में आया हुआ परिवर्तन है जो कि राजनीति में विकल्प की तलाश में है और नये राजनीतिक विचारधाराओं व राजनीतिक दलों को सत्ता सौंपना चाहता है।

इक्कीसवीं सदी में भारतीय राजनीति का स्वरूप पूर्णतया परिवर्तित हो चुका है और सरकारों के चयन की प्रक्रिया में जनता अधिक विवेक का प्रयोग करके अपने मत का प्रयोग करने लगी है। चुनावों में बढ़ता हुआ मत प्रतिशत इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि जनता राजनीतिक रूप से अधिक सजग है किन्तु राजनीति में एक गम्भीर स्थिति पैदा हो गई है जिसमें कि सरकारों का गठन ऐसे राजनीतिक दलों के द्वारा किया जा रहा है जिन्हें स्वयं भी कोई स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है और सर्वाधिक सदस्य संख्या वाले राजनीतिक दल केन्द्र तथा कतिपय राज्यों में अन्य राजनैतिक दलों से गठजोड़ करके शासन में सत्तारूढ़ है और न्यूनतम साझा कार्यक्रम की सहायता से शासन चला रहे हैं। इस गठजोड़ में परस्पर विरोधी विचारधारा वाले दल भी शामिल हैं।

भारतीय चुनावी राजनीति में मतदाता के राजनीतिक व्यवहार को निर्धारित करने वाला सबसे बड़ा कारक जाति का मुद्दा है। जिसमें राजनीतिक दलों के द्वारा भी निर्वाचन क्षेत्रों में उम्मीदवार निर्धारित करते समय सम्बन्धित क्षेत्रों में जातिगत आधार को प्रमुख माना जाता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जाति की जड़ें बहुत गहरी है और सामाजिक सम्बन्धों के निर्धारण का यह मुख्य आधार है। जातियाँ संगठित होकर राजनीतिक और प्रशासनिक निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करती है। चुनाव अभियान में जातिवाद को साधन के रूप में अपनाया जाता है। जातीय संगठन राजनीतिक महत्व के दबाव समूह के रूप में प्रवृत्त है। यद्यपि जनता का व्यवहार रूढ़िवादी नहीं है लेकिन राजनीतिक दलों के द्वारा उनके समक्ष विकल्प ही नहीं रखे जायेंगे तो उन्हें इस संकीर्ण आधार पर ही अपने वोट का प्रयोग करना पड़ता है। भारतीय राजनीति में धर्म और सम्प्रदाय प्रभावक भूमिका अदा करते हैं। चुनावों की राजनीति में पंथ और सम्प्रदाय के नकारात्मक महत्व को उभारा है। एक तरह से सम्प्रदाय राजनीतिक दलों के वोट बैंक बन गये हैं। सत्तारूढ़ दल के आचरण और क्रियाकलापों का मतदान व्यवहार पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। चुनाव के समय सत्तारूढ़ दल यदि जनहित के कार्यों में रुचि लेता है, लोगों की दैनिक आवश्यकताओं की उचित पूर्ति की व्यवस्था करता है और शांति–व्यवस्था की स्थिति बनाये रखता है तो मतदान सामान्यतः शासक दल के पक्ष में होता है। मतदान व्यवहार को निर्धारित करने वाले कारकों में चुनाव प्रचार अभिचान, स्थानीय मुद्दे, भाषा, विचारदारा उम्मीदवार की व्यक्तित्व मीड़िया का प्रभाव राष्ट्रीय मुद्दे प्रमुख है। दो दशक से विकास का मुद्दा भी राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र व चुनाव अभियान का प्रमुख आधार बना हुआ है जो कि मतदाता के व्यवहार को निर्धारित करता है।

भारत में महिला मतदाताओं का मतदान व्यवहार

भारत का सामाजिक स्वरूप परम्परागत आधारों पर टिका हुआ है किन्तु संविधान के द्वारा लैंगिक आधार पर फैली हुई असमानता को दूर करने का प्रयास किया गया है जिसमें प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को मत देने का अधिकार दिया गया है। लेकिन महिलाओं के साथ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक प्रत्येक स्तर पर दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता है। राजनैतिक रूप से उनकी भागीदारी लोकसभा व राज्य विधानसभाओं में कम ही रहती है। प्रथम लोकसभा में कुल 4.5% ही मंत्रीमंडल में उनका प्रतिनिधित्व था वहाँ वर्तमान मंत्रीमंडल में भी उनकी हिस्सेदारी मात्र 12.15% ही है जो कि यह परिलक्षित करता है कि सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्थायें कितनी भी परिवर्तित हो जायें लेकिन महिलाओं के लिए राजनीति अभी भी बहुत अधिक अवसर वाला क्षेत्र नहीं है।

यद्यपि भारत में विधायी संस्थाओं व मंत्रीमंडल में महिलाओं की भागीदारी अभी तक बहुत अधिक नहीं हैं किन्तु राजनीति में इस क्षेत्र में बहुत परिवर्तन आया है कि महिलायें अपने मत का प्रयोग बढ़–चढ़कर करने लगी हैं। महिलाओं के मताधिकार के निर्धारण में परिवार, समुदाय व समाज की भूमिका प्रमुख होती है। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि भारत में ग्रामीण महिलायें अपने वोट का अधिक प्रयोग करती है और क्षेत्रवार विश्लेषण किया जाये तो उत्तरपूर्वी राज्यों में महिलायें मत प्रयोग में अव्वल हैं। भारतीय व्यवस्था में महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें राजनीतिक भागीदारी का अधिक से अधिक अवसर दिया जाये। इसके लिए केवल यह पर्याप्त नहीं होता कि उन्हें राजनीतिक इकाइयों में आरक्षण प्रदान किया जाये बल्कि उस मानसिकता को परिवर्तित किये जाने की आवश्यकता है तो समाज में लैंगिक आधार पर भेदभाव को बढ़ावा देती है। इसके लिए शिक्षा का स्तर बढ़ाना महिला सशक्तिकरण का सबसे बड़ा आधार हो सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय मतदाताओं ने अपने मतदान व्यवहार से यह स्पष्ट कर दिया है कि केन्द्र में ऐसी सरकार चाहते हैं जो टिकाऊ और सक्षम हो, जो कि एक इकाई की भाँति काम कर सके और देश को स्थिरता प्रदान करते हुए उसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा बनाये रखें। कतिपय राजनीतिक क्षेत्रों में ऐसी धारणा व्याप्त है कि भारत की जनता अपने मताधिकार का प्रयोग औचित्य तथा विवेक के साथ नहीं कर सकती, क्योंकि वह अभी तक अशिक्षा, गरीबी, जातिगत, द्वेष, धर्मान्धता आदि की शिकार है लेकिन प्रथम आम चुनाव से लेकर अब तक सम्पन्न लोकसभा व विधानसभाओं के चुनावों में भारतीय जनता का जो मतदान व्यवहार रहा है उससे यह पुष्टि होती है कि उपरोक्त भ्रामक मत केवल उन्हीं लोगों का है जो भारतीय जनता के मन–मस्तिष्क को भली–भाँति नहीं समझते जिन्हें भारत के मतदाताओं के चरित्र का बोध नहीं है। अभी तक भारतीय मतदाताओं ने अपने मतदान में जिस विवेक और कुशलता का परिचय दिया है, कतिपय अपवादों को छोड़कर अनुशासनप्रियता प्रदर्शित की है उससे संसदीय लोकतंत्र का भविष्य यथावत सुरक्षित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गेना, सी.बी., तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाएं, प्रकाशन वर्ष 2018, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पेज नं. 983
2. वही पेज नं. 983
3. गाबा, ओमप्रकाश, राजनीति विज्ञान विश्वकोश, प्रकाशन वर्ष 2002, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पेज नं. 294
4. हजारिका बिराज, वोटिंग बिहेवियर इन इण्डिया, www.iosrjournals.org
5. जैन, पुखराज, भारतीय शासन एवं राजनीति, प्रकाशन वर्ष 2011, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पेज नं. 697
6. त्रिवेदी, आर.एन. व राय एम.पी., भारतीय सरकार एवं राजनीति, प्रकाशन वर्ष 2009, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, पेज नं. 340
7. गोस्वामी, बालचन्द्र, संसदीय लोकतंत्र सफल या असफल प्रकाशन, वर्ष 2007, राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर पेज नं. 3
8. राय प्रवीन, इलैक्टरोल पार्टिसिपेशन ऑफ वूमैन इण्डिया, इकोनोमिक व पॉलिटिकल वीकली, जनवरी 2011

***व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)**
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दौसा, राजस्थान